

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

सरिता सिंह¹, डॉ. शैलबाला सिंह²

¹रिसर्च स्कॉलर, ओरिएंटल युनिवर्सिटी, इंदौर

²असिस्टेंट प्रोफेसर—एजुकेशन डिपार्टमेंट, ओरिएंटल युनिवर्सिटी, इंदौर

शोध सार:

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील विकास की प्रक्रिया है। यह वक्त होता है जब छात्र अपने विद्यालयी जीवन के आखिरी वर्षों में होते हैं और उनके सामने विभिन्न जीवन के चुनौतियों का सामना करना होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में गहरी ज्ञान और समझ प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ ही छात्रों को आत्म-समर्पण, सामाजिक सद्भावना, और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति भी जागरूक बनाता है। यह स्तर छात्रों को उनकी भौतिक, मानसिक, और आत्मिक परिपक्वता का विकास करने का मौका देता है। इस अवसर का सही तरीके से उपयोग करने से छात्र अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल होते हैं, साथ ही वे एक सामर्थ्य विकसित करते हैं जो उन्हें अपने जीवन के अलावा समाज में भी महत्वपूर्ण योगदान करने के लिए तैयार करता है।

प्रस्तावना

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता के विकास में उनके शिक्षकों, परिवार के सदस्यों, और समाज के साथी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का विकास केवल शैक्षिक संस्थानों के अंदर ही नहीं, बल्कि उनके पर्यावरण, मानसिकता, और नैतिक मूल्यों के साथ भी संबंधित होता है। छात्रों को सामाजिक सद्भावना, गरिमा, और सहानुभूति की महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए, जो उन्हें अच्छे नागरिक और उत्तराधिकारिता के प्रति सजग बनाता है। इस स्तर पर, छात्रों को विभिन्न विषयों में निष्कर्षता प्राप्त करने के साथ-साथ, विचारशीलता, संवाद कौशल, और समूह कार्य की क्षमता को भी विकसित करने का मौका मिलता है। यह उन्हें आत्म-संवाद में सुधार करने, समस्याओं का समाधान ढूँढने, और सोचने की क्षमता में सुधार करता है, जो उनके जीवन के सभी पहलुओं में उपयोगी होता है।

इसके अलावा, उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में साहसी और संवेदनशील बनाने के लिए साहस और निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया के माध्यम से, वे अपने आत्म-संवाद में मजबूत होते हैं और समाज में अधिक जागरूक और सक्रिय नागरिक बनते हैं। इस तरह, उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता उनके जीवन के सभी पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उन्हें समृद्धि और सफलता की दिशा में मदद करती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव

सोशल मीडिया आजकल के युवाओं के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, और यह उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर भी गहरा प्रभाव डालता है। इस प्रभाव को समझने के लिए, हमें कुछ संदर्भ देखने की आवश्यकता है:

आत्म-समर्पण और आत्म-समझ: सोशल मीडिया विद्यार्थियों को अपने आप को पेश करने का मौका देता है, लेकिन इसके साथ ही यह भी आत्म-समर्पण की भावना पैदा कर सकता है। यह उन्हें विचार करने और अपनी भूमिका को समझने में मदद कर सकता है।

आत्म-संवाद: सोशल मीडिया के माध्यम से, विद्यार्थियों को विचार-विमर्श करने का मौका मिलता है। वे अपने दृष्टिकोण से जुड़े और अपने विचारों को अन्य लोगों के साथ साझा करने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे देश के युवा जनसंख्या का हमारे देश के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका है जो हमारे देश की मजबूत रीढ़ का गठन करते हैं। हमारे देश के समग्र सफलता और विकास के लिए मजबूत और स्वस्थ उभरते युवा वर्ग की बहुत महत्वपूर्ण बात है। उभरता हुआ युवा जीवन एक समय के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें किशोरावस्था का अंत और वयस्क जिम्मेदारियों की शुरुआत होती है। इस आधुनिक युग में हमारे देश के उभरते युवा अपने जीवन में कई समस्याओं का सामना करते हैं, जो उनके घर, शैक्षिक संस्थानों, समाज आदि से हो सकती हैं। ये समस्याएँ उनके जीवन को बहुत तनावपूर्ण बना सकती हैं, जो आगे अधिक चिंता, दबाव, तनाव आदि की ओर

ले जा सकती हैं। यह वो समय होता है जब जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन घटते हैं, जैसे कि स्कूल से कॉलेज जाना, नए लोगों से मिलना, ज्यादा जिम्मेदारियों का सामना करना और अपनी खुद की पहचान होती है, जिससे शारीरिक और भावनात्मक दोनों प्रकार की कई कठिनाइयाँ हो सकती हैं। उभरते युवा वयस्कों को, हालांकि वे किशोरावस्था से गुजर चुके हों, संपूर्ण रूप से वयस्क के रूप में महसूस नहीं कर सकते हैं। (आर्नेट, 2000)

भावनात्मक परिपक्वता में एक व्यक्ति की क्षमता शामक स्थिति का सामना करने की क्षमता शामिल है। हमारी भावनाएँ दो घटक होती हैं, वे हैं: शारीरिक उत्तेजना की अवस्था और हम उस भावना को लेबल करने के लिए उपयोग करते हैं। (हॉग और वॉन, 2010) भावनात्मक परिपक्वता एक व्यक्ति को एक प्रभावी तरीके से अपनी और दूसरों की भावनाओं का प्रबंधन करने में मदद करती है। परिपक्वता एक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण कारक है। एक परिपक्व व्यक्ति को उसे व्यापक रूप से बुद्धिमत्ता, भावनात्मक रूप से, और आध्यात्मिक रूप से विकसित होने वाला व्यक्ति माना जा सकता है।

अध्ययन की उपयोगिता

सोशल मीडिया आजकल विद्यार्थियों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, और इसका अध्ययन के उपयोगिता पर भी गहरा प्रभाव पड़ रहा है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए यह विषय विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसका सीधा असर उनकी भावनात्मक परिपक्वता पर होता है। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की जानकारी, समाचार, और मनोरंजन का अधिक आधिक पहुंचता है। इसके माध्यम से वे अपने विचार और भावनाओं को साझा कर सकते हैं और विश्व समाचार के साथ जुड़े रह सकते हैं। इसका सीधा प्रभाव उनकी भावनात्मक परिपक्वता पर होता है, क्योंकि वे अपने विचारों को व्यक्त करने का तरीका सीखते हैं और अलग-अलग विचारों के साथ रहने की क्षमता विकसित करते हैं।

साहित्य समीक्षा

सूत्रधार, ए. और सेन, एस. (2022) के शोध के अनुसार भावनात्मक परिपक्वता को किसी व्यक्ति के जीवन के हर पहलुओं में स्वस्थ रूप से निपटने की आधारशिला माना जा सकता है। हालांकि, यह शिक्षा और सीखने के क्षेत्र में अधिकतम समअंदज है। शिक्षकों और छात्रों के लिए अकादमिक प्राप्ति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षुओं के बीच भावनात्मक परिपक्वता और इसके विभिन्न पहलुओं के अकादमिक प्राप्ति पर प्रभाव जानना था। अध्ययन के परिणाम ने यह भी दिखाया है कि B. Ed. प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उत्कृष्टता के संबंध में भावनात्मक परिपक्वता और इसके कुछ पहलुओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं, जैसे कि भावनात्मक प्रगति और स्वतंत्रता। हालांकि, बी.एड. प्रशिक्षुओं के शैक्षिक उत्तीर्णता पर उनके भावनात्मक स्थिरता, सामाजिक समायोजन और व्यक्तित्व एकीकरण के आयामों के लिए कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। शोध का निष्कर्ष यह है कि भावनात्मक परिपक्वता और इसके आयामों का शिक्षार्थी के शैक्षिक उत्तीर्णता पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है।

रुक्मिणी एस. और, रामस्वामी सी. (2021) के शोध के अनुसार भावनात्मक परिपक्वता एक व्यक्ति की भावनाओं और भावनाओं को समझने और संचालित करने की क्षमता को सूचित करती है। जब व्यक्तियों को किसी कठिन या जटिल परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, तो भावनात्मक परिपक्वता का स्तर स्थिति और परिणामों के सामना करने की क्षमता को निर्धारित करने में सबसे बड़ा कारक होता है। किशोरों के बीच भावनात्मक परिप्रेक्ष्य और अकादमिक उत्कृष्टता के बीच सकारात्मक संबंध है और कुछ क्षेत्रों में भावनात्मक परिप्रेक्ष्य अधिकतर अकादमिक उत्कृष्टता को पूर्वानुमानित करता है। इस प्रकार, किशोरों की अकादमिक उत्कृष्टता में भावनात्मक परिप्रेक्ष्य की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अलताफ हुसैन गनई और मोहम्मद यूसुफ गनई (2021) द्वारा अध्ययन किया गया था जिसका उद्देश्य कश्मीर के किशोरों के बीच भावनात्मक परिपक्वता और अकादमिक उत्कृष्टता की जांच करना था। इस अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया और प्रतिस्थापित नमूना तकनीक के माध्यम से उत्तरदाताओं का चयन किया गया। शोध परिणामों का निष्कर्ष है कि शिक्षा स्तर पर कश्मीर के सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। कश्मीर के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्व और अकादमिक उत्कृष्टता के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध पाया गया है।

राय, दीपक (2021) ने "सोशल मीडिया का युवाओं पर पड़ रहे प्रभावों" शीर्षक विषय पर शोध किया। उन्होंने अपने शोध प्रबंध के सारांश में लिखा है, कि सोशल मीडिया जिसमें फेसबुक, ट्विटर, मैसेजर वाट्सएप का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इन माध्यमों का प्रभाव शहर से लेकर गाँव तक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होना लगा है। बच्चे हो, युवा हो, प्रौढ़ हो या फिर बुजुर्ग हो, कोई इसका अछूता नहीं है। इस प्रकार से कहा जा सकता है, कि समाज का लगभग हर वर्ग सोशल मीडिया में इन दिनों सक्रिय है। शोध के दौरान यह भी सामने आया है, कि सोशल मीडिया का यदि सकारात्मक प्रयोग किया जाये, तो इसका फायदा राजनैतिक दलों के साथ ही आमजन को मिल सकता है। इसके अलावा सोशल मीडिया के कारण राजनीति में सुचिता और पारदर्शिता भी बढ़ जाती है।

शोध अंतराल

आजकल की तकनीकी युग में, सोशल मीडिया ने विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव बढ़ाया है, और इसका शिक्षा में भी गहरा प्रभाव

है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन में सोशल मीडिया के प्रभाव पर एक शोध कासाार करने का मकसद है। समय के साथ ही, तकनीकी विकास ने हमारे समाज को बदल दिया है और इसमें सोशल मीडिया ने बड़ा हाथ होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए इसका प्रभाव भी काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनकी भावनात्मक परिपक्वता पर सीधा असर डालता है।

उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

(H₀₁) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि

शोध में चर—

प्रस्तुत शोध में चरों का निरूपण निम्नलिखित होगा:—

स्वतंत्र चर – सोशल मीडिया

परतंत्र चर— भावनात्मक परिपक्वता

शोध में प्रयुक्त पदों का संक्रियात्मक परिभाषीकरण –

भावनात्मक परिपक्वता – ब्रैड हैम्ब्रिक ने दो विशेषताओं के संदर्भ में भावनात्मक परिपक्वता को परिभाषित किया उनके अनुसार, “भावनात्मक परिपक्वता किसी की भावनाओं को अलग करने और अपनी भावनाओं को ठीक से पहचानने की क्षमता है। भावनात्मक परिपक्वता सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देती है।”

सोशल मीडिया—सोशल मीडिया को सोशल सर्विस के नाम से जाना जाता है इसका मतलब है कि इंटरनेट का इस्तेमाल कर अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ जोड़ना वह साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी विषय वस्तु का आदान प्रदान करना ।

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रकार का है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिदर्श के आधार पर 220 छात्र-छात्राओं अर्थात कक्षा 11वीं और 12वीं को सम्मिलित किया गया जिनकी आयु 16 से 19 वर्ष तक है।

शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 220 छात्र-छात्राओं को यादृच्छिक गुच्छ न्यादर्शन विधि का प्रयोग कर न्यादर्श हेतु चुना गया।

प्राथमिक समंक जिसमें निदर्शन विधि का उपयोग करते हुये उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन कर एवं प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के लिये प्रश्नावली के द्वारा जानकारी एकत्रित की गई है।

द्वितीयक समंक स्रोत्र के लिये प्रकाशित जानकारी संदर्भित पुस्तकें, शोध के विषय से संदर्भित अंतराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक (क्षेत्रीय) शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट के बेबसाईट, लघुशोध ग्रंथों, इत्यादि के द्वारा जानकारी एकत्रित कर विश्लेषात्मक अध्ययन एवं निष्कर्ष ज्ञात किया गया है।

संख्यिकीय विधि सहसंबंध विश्लेषण, प्रतिगमन विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पना का सत्यापन

(H₁) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव है।

तालिका क्रमांक 1										
Model Summary ^b भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव										
मॉडल	R	R Squared	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate	Change Statistics					डर्बिन-वाटसन
					R Square Change	F Change	df1	df2	Sig. F Change	
1	.746 ^a	.556	.555	3.39	.556	6.26	1	218	.000	2.12
a. Predictors: (Constant), सोशल मीडिया										
b. Dependent Variable: भावनात्मक परिपक्वता										

दोनों कारकों उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता एवं सोशल मीडिया का प्रभाव के मध्य पियर्सन सहसंबंध परीक्षण करने पर 0.746 मान प्राप्त हुआ है, अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य पियर्सन मान व सार्थकता मूल्य (p-

value) स्तर मान 0.05 से कम होने पर कारकों के मध्य मजबूत संबंध है। मॉडल समरी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, लिनियर सहसंबंध गुणांक R का मान 0.746 है, व आर. स्क्वेयर (0.556) है जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में सोशल मीडिया के मापदण्ड पर 55.6% है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि परिकल्पना (H₁) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव है सत्य सिद्ध होती है।

तालिका क्रमांक 2						
Coefficients ^a भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव						
मॉडल		अमानकीकृत गुणांक		मानकीकृत गुणांक	टी- मान	पी –मान
		B	मानक त्रुटि	बीटा		
1	(सतत)	3.74	.586		6.38	.000
	सोशल मीडिया	.495	.020	.747	25.04	.000
a. आश्रित चर: भावनात्मक परिपक्वता						

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों चरों के मध्य Coefficients^a ज्ञात किया गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता को निर्भर चर तथा सोशल मीडिया को स्वतंत्र चर माना गया है। इस अध्ययन हेतु सबसे पहले बीटा स्तर का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् टी टेस्ट (t) का उपयोग किया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि t टेस्ट का मान 6.38 है, जो अधिक है। लिनियर समीकरण $Y = 3.74 + .495X$ है, जो कि सकारात्मक रेखीय संबंध को इंगित करता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव पर कुछ निष्कर्ष निकालने के बाद, हमारा अंतिम निष्कर्ष यह है कि सोशल मीडिया का प्रभाव विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर है। सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के बीच सहज और स्फूर्तिदायक वातावरण बना सकता है, जिससे उनकी सोशल स्किल्स विकसित होती हैं और उन्हें समाज में सामाजिक रूप से सक्रिय बनाने में मदद मिलती है।

हालांकि, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग भी विद्यार्थियों के भावनात्मक परिपक्वता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। यह उन्हें अनिश्चितता, आत्म-आलोचना और अपनी आत्मा की तुलना अन्यो के साथ करने की आदत डाल सकता है, जो उनके साथ किसी भी सामाजिक संबंध में असुविधा का कारण बन सकता है। इसलिए, हमारा निष्कर्ष है कि सोशल मीडिया का प्रभाव बहुतायत विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर निर्भर करता है कि वे इसे कैसे उपयोग करते हैं और उसके साथ कैसे संतुलन बनाए रखते हैं। सोशल मीडिया का सक्षम और समझदार उपयोग उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने में मदद कर सकता है, जबकि अत्यधिक उपयोग उनकी भावनात्मक परिपक्वता को प्रभावित कर सकता है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव पर सुझाव

सोशल मीडिया का प्रयोग करते समय विद्यार्थियों को सक्रिय और सतर्क रहने की अवधारणा को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। सोशल मीडिया पर उपयुक्त निर्देशिका और सावधानियों का पालन करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों का समय व्यर्थ होने से बचा जा सके।

विद्यार्थियों को सोशल मीडिया पर विश्वासीय स्रोतों की खोज और उपयोग का महत्व समझाना चाहिए। वे विवेकपूर्ण रूप से सोशल मीडिया का उपयोग करें ताकि उनकी भावनात्मक परिपक्वता पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

विद्यार्थियों को सोशल मीडिया पर सकारात्मक और उत्तेजनात्मक संदेश शेयर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे उनकी सोशल मीडिया पर अपनी भावनाओं को साझा करने की क्षमता मजबूत होगी और उनकी परिपक्वता में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है।

विद्यार्थियों को सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने से रोकने के लिए उन्हें उपयुक्त समय प्रबंधन कौशल सिखाए जाने चाहिए। वे अपने समय को सोशल मीडिया के साथी गतिविधियों के लिए नियत करें और अपने अध्ययन और सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं को संतुलित रूप से संभालें।

सोशल मीडिया पर उत्साह और प्रोत्साहन के साथ समय बिताने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाना चाहिए। वे सोशल मीडिया का सही तरीके से उपयोग करके अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं और अपने सामाजिक और भावनात्मक परिपक्वता में सुधार कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. Altaf Hussain Ganie and Mohammad Yousuf Ganai (2021) Emotional Maturity and Academic Achievement among Adolescents of Kashmir. *The International Journal of Indian Psychology*. Volume 9, Issue 2, pp. 428-435.
2. Anjali Dave (2019) Emotional Maturity and Academic Achievement: A Correlational Study. *International Journal of Research in Social Sciences* Vol. 9 Issue 3, pp. 658-664
3. Dutta, J., Chetia, P. and Soni, J. C. Soni (2016) Academic Achievement, Emotional Maturity and Intelligence of Secondary School Students in Assam. *Journal of Behavioural Sciences*. Volume 5 Issue 7, pp.1159-1171
4. Krishan Lal. (2014). Emotional Maturity, Self Confidence and Academic Achievement of Adolescents In Relation to Their Gender and Urban-Rural Background. *American International Journal of Research in Humanities, Arts and Social Sciences*, 5(2), 188-193
5. Mriganka Narayan Das. (2014). A Comparative Account of Academic Achievement and Emotional Maturity among Secondary School Students of Rural and Urban area. *European Academic Research*, 2(6), 7392-7401.
6. Prathibha, M. V. and Ashok, H. S. (2017) Review Article Emotional Maturity and Academic Performance of Adolescents. *International Journal of Current Research* Vol. 9, Issue, 03, pp.785-789.
7. Rukmini S. and, Ramaswamy C. (2021) Relationship between emotional maturity and academic achievement among adolescents. *The International Journal of Indian Psychology*. Volume 9, Issue 1, pp. 268-274.
8. Saraswat, B. and Singh, M. (2015) A Correlational Study of Emotional Maturity and Academic Achievement of High School Students. *International Research Journal of Management Sociology & Humanity*. Vol. 6 (4), pp. 270-275.
9. Sutradhar, A. and Sen, S. (2022) Effect of Different Dimensions of Emotional Maturity on Academic Achievement of B.Ed. Trainees – A Study. *International Journal of Research Publication and Reviews*, Vol 3, no 11, pp 1237-1247.